B-2
L-1

दिनांक
26-10-23

प्रश्न- 18 वीं सदी का भारत विखंडित राजतंत्र की छाया से किस प्रकार ग्रसित था स्पष्ट करें।

↳ 18 वीं सदी के मध्यतक विशेषत: औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का क्षरण होने लगा था और उसके ध्वंस पर भारत के विभिन्न भागों में अलग-अलग राजनैतिक शक्तियां स्थापित होने लगीं थी-

1. बंगाल, अवध व हैदराबाद जैसे उत्तराधिकारी राज्य।
2. मराठा, पंजाब व मैसूर जैसी क्षेत्रीय शक्तियां
3. यद्यपि राजनैतिक स्थिति के केन्द्र में भले ही मुगल शासन स्थापित था किन्तु 1739 में नादिरशाह के आक्रमण के बाद मुगल सत्ता की कमजोरी स्पष्ट हो चुकी थी तथा अब मराठे इतने मजबूत होने लगे थे कि उन्हें मुगलों का उत्तराधिकारी कहा जाने लगा था।
4. तत्कालीन भारत में केवल विभिन्न राजनैतिक शक्तियां स्थापित ही नहीं हुईं बल्कि इनकी आपस में प्रतिद्वंद्विता बने रहने से भारतीय राजनीति संघर्ष-मय हो चली थी।

इस प्रकार इन्हीं परिस्थितियों के कारण यह कहा जाने लगा था कि 18 वीं सदी का भारत विखंडित राजतंत्र की छाया से ग्रसित था और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की बढ़ती राजनैतिक महत्वाकांक्षा ने

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES © KHAN SIR

इस विखंडन को और बढ़ा दिया

⇒ **विशेष**- इतिहासकारों का एक समूह इस कालखण्ड को Dark Age (अंध युग) घोषित करने का प्रयास करता है किन्तु वास्तविकता यह है कि इस दौर में विभिन्न राजतंत्रों ने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक आयामों से भारतीय इतिहास को एक नया आयाम दिया और भारत की विशिष्टता में वृद्धि की। अतः इसे अंधयुग के रूप में इसे नहीं स्वीकारा जा सकता।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन

- 15वीं सदी के उत्तरार्ध में यूरोप में पुनर्जागरण का दौर आरम्भ हुआ और इसी समय भौगोलिक खोजों, धर्म सुधार आन्दोलन और कमाल जैसे आविष्कारों ने पश्चिमी जगत को नये सिरे से सोचने को विवश कर दिया।

विद्वानों और आविष्कारकों ने मध्यकाल की दो महत्वपूर्ण मान्यताओं को नकार दिया-

1- पृथ्वी चौकोर है

2- ब्रह्माण्ड पृथ्वी केन्द्रित है

इसके स्थान पर यह स्थापित हुआ कि पृथ्वी गोल है और ब्रह्माण्ड सूर्य केन्द्रित है और इसके साथ ही मैगलेन जैसे साहसी नाविक ने अपनी यात्रा से सिद्ध किया कि पृथ्वी गोल है।

- इस दौर में मुख्यतः पश्चिमी यूरोप भारतीय व्यापार से पूरी तरह वंचित हो चला था। काली मिर्च व अन्य मसालों तक उनकी पहुंच समाप्त हो चली थी क्योंकि कुस्तुनतुनियां (इस्तांबुल) पर तुर्कों के प्रभाव के बाद परंपरागत व्यापारिक मार्ग से भारत के साथ व्यापार करना संभव नहीं था। जबकि यूरोपीय व्यापारियों को यह बखूबी ज्ञान था कि भारतीय सामग्री की मांग यूरोपीय बाजार में बहुत अधिक है

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Trusted Learning Platform KHAN SIR

अतः इन परिस्थितियों में नये मार्ग से भारत की खोज आवश्यक हो गयी थी।

- 1498 में वास्कोडिगामा ने बार्थोलिनियों द्वारा खोजे गये "केप ऑफ गुड होप" के रास्ते नये मार्ग से भारत की खोज की और उसके बाद क्रमशः विभिन्न विदेशी व्यापारिक कंपनियां भारत आने लगी। उल्लेखनीय है कि ये व्यापारिक कंपनियां पहले के व्यापारिक संबंधों से मुख्यतः दो रूपों में अलग थी–

a- इनके पास अपनी निजी सेना होती थी।

b- इन कंपनियों को अपने देश की सरकार से चार्टर (अधिकार पत्र) मिला होता था। अर्थात इन कंपनियों को अपने देश की राजनैतिक शक्ति का समर्थन हासिल था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

पुर्तगाली कंपनी

- 1498 में वास्कोडिगामा एक गुजराती व्यापारी अब्दुल मजीद की सहायता से सर्वप्रथम कालीकट पहुंचा जहां हिन्दू शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया किन्तु वहां पहले से स्थापित अरब व्यापारियों ने आर्थिक हितों के आधार पर पुर्तगालियों का विरोध किया।

- पूरब के साथ व्यापार के लिए पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी स्थापित की गयी और 1505 में डी अल्मेडा पहला गवर्नर

बनकर भारत आया जिसने "Blue water Policy" चलाई जिसका अर्थ था समुद्री शक्ति के आधार पर हिन्द महासागर के व्यापारिक मार्ग पर नियंत्रण करना।

- पुर्तगालियों का सबसे लोकप्रीय गवर्नर अल्बुकर्क था जिसने एक व्यापारिक इकाई से क्षेत्रीय ताकत के रूप में पुर्तगालियों को रूपांतरित कर दिया और इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि 1510 में बीजापुर के आदिलशाही शासक से गोवा को छीना था।

कर्क ने राजनैतिक सूझबूझ का परिचय देते हुए विजय-नगर के शासक कृष्णदेव राय से मित्रवत संबंध स्थापित किये और उसने भारत में पुर्तगालियों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए वैवाहिक संबधों को बढ़ावा दिया।

- पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोच्ची में स्थापित की और उसे प्रारम्भिक राजधानी भी बनाया किन्तु बाद में इसे गोवा स्थानान्तरित कर दिया। पुर्तगालियों का मुख्य ध्यान काली मिर्च व मसालों के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करना था और इन्होंने ही भारतीयों को पहली बार प्रिंटिंग प्रेस व तम्बाकू की खेती से परिचित कराया तथा इनके सम्पर्क का प्रभाव हमारी वास्तुकला पर भी पड़ा और भारत में "गोथिक शैली" में भवनों का निर्माण आरम्भ हुआ।

- 1632 में शाहजहां ने पुर्तगालियों को सूरत तट से बाहर निकालने का आदेश दिया क्योंकि यहां के लोगों को अपने धर्म पालन मे कठिनाई हो रही थी, और पुर्तगाली इसाई धर्म का प्रचार कर रहे थे।

- पुर्तगालियों ने भारत के पश्चिमी तट के बंदरगाहों पर नियंत्रण के लिए कार्टेज पद्धति को बढावा दिया अर्थात समुद्री व्यापार के लिए लाइसेंस जैसा पत्र। अकबर जैसे शासक ने भी पुर्तगालियों की कार्टेज व्यवस्था को स्वीकारा।

- 1542 में संत फ्रांसिस जेवियर पुर्तगाल के राजा जॉन तृतीय व पोप की सहायता से गोवा पहुंचे और भारत में जेसुइट चर्च की स्थापना की और ईसाई धर्म प्रचार को बढावा दिया।

यहां से वे जापान गये और भारत वापसी के बाद चीन की ओर रूख किया किन्तु वहां की मुख्य भूमि पर पहुचने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गयी। इनके अवशेषों को गोवा लाया गया और प्रतिवर्ष एक समारोह आयोजित किया जाता है। यह मान्यता भी है कि ये प्रत्येक दसवें वर्ष जीवित हो उठते हैं। * 2014 में इस अवसर पर भव्य समारोह आयोजित किया गया था।

KGS IAS

डच कंपनी -:

- डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1602 में हुई और भारत के साथ व्यापार करने के लिए इसे 21 वर्षों का चार्टर मिला। इस कंपनी के निर्देशकों की संख्या 17 थी इसीलिए इसे "जेंटलमेन सेवन्टीन" भी कहा गया।
- डचों ने अपनी पहली फैक्ट्री मसूलीपट्टनम में स्थापित की तथा एकमात्र किलेबंदी पुलिकट में की।
- भारतीय कपड़े को विदेशी बाजार में स्थापित करने का श्रेय डचों को ही दिया जाता है और इन्होंने कभी भी वस्त्र व्यापार पर अनुचित कर नहीं लगाया। डचों ने आरम्भ में पुर्तगालियों से कई क्षेत्र जीते किन्तु 1759 में बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों से इन्हें निर्णायक शिकस्त मिली और अपना ध्यान इन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया में लगाया एवं अपना मुख्यालय पाटविया (इण्डोनेशिया) में बनाया।

- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी -(EIC)

- 1600 ई. में महारानी एलिजाबेथ द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत के साथ व्यापार करने के लिए 15 वर्षों का चार्टर दिया गया जिसे बाद में शासक जेम्स प्रथम ने अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दिया।

- 1608 में हॉकिन्स आधिकारिक रूप से भारत में फैक्ट्री खोलने की इजाजत लेने आया जिसके पास अकबर को सम्बोधित करते हुए शासकीय पत्र था किन्तु 1605 में अकबर की मृत्यु हो चुकी थी अतः वह जहांगीर के समक्ष उपस्थित हुआ और उसने तुर्की भाषा में बात की जिससे प्रसन्न होकर जहांगीर ने उसे 400 जात का मनसब प्रदान किया और इसे इंग्लिश खान की उपाधि प्रदान की।

- अंग्रेजो ने अपनी पहली फैक्ट्री 1608 में सूरत में स्थापित की और फिर 1613 में इसे स्थायी रूप दे दिया इसी तरह दक्षिण में मुसलीपट्टनम तथा पूरब में पहली फैक्ट्री बालासोर (उड़ीसा) में स्थापित की।

- 1632 में गोलकुण्डा के शासक ने ईस्ट इंडिया कंपनी को अपने क्षेत्र में व्यापारिक रियायतों का फरमान दिया और इसे कंपनी के लिए "गोल्डन चार्टर" कहा गया।

1717 में मुगल सम्राट फर्रुखसियर द्वारा EIC को अत्यधिक रियायतों का फरमान दिया गया जिसमे बंगाल में व्यापारिक छूट के साथ ही बंम्बई में सिक्के जारी करने की छूट तथा हैदराबाद में भी अंग्रेजों की स्वतंत्रता को स्वीकारा गया। इसे भारत में कंपनी के लिए मैग्नाकार्टा कहा गया।

स्थान / वर्ष	किला	विशेष
- मद्रास (1640)	- सेंट जॉर्ज	- फ्रांसिस डे को मद्रास का निर्माता कहा जाता है।
- कलकत्ता (1699)	- फोर्ट विलियम	- इस किले का प्रथम अध्यक्ष चार्ल्स आयर था।
- बम्बई (1720)	- सेंट थॉमस	- यहां का सबसे महत्वपूर्ण गवर्नर औंगियार था जिसने तलवार के बल पर भारतीय क्षेत्रों को नियंत्रण में लेना चाहा।

- जब जॉन चाइल्ड बम्बई का गवर्नर था तो मुगलों के व्यापारिक जहाजों को लूटने के आरोप में 1686 में औरंगजेब की सेना ने उसे दण्डित किया अतः चाइल्ड को ब्रिटेन वापस बुलाना पड़ा।
- पुर्तगाली शासक ने ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय को बम्बई दहेज में दिया जिसे 1667-68 में चार्ल्स ने 10 पाउण्ड प्रतिवर्ष की लीज पर बम्बई कंपनी को सौंप दिया।

- फ्रांसीसी व्यापारिक कंपनी -:

- 1664 में फ्रांस के शासक लुई XIV के मंत्री कोल्बर्ट ने फ्रांसीसी कंपनी की स्थापना की।
- 1668 में फ्रांसीसियों ने भारत में अपनी पहली फैक्ट्री सूरत में स्थापित की और बाद में अपनी गतिविधियों का

केन्द्र पाण्डिचेरी को बनाया।

- फ्रांसीसी कंपनी का सबसे प्रभावी गवर्नर डुप्ले था जिसने भारतीय राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप की शुरुआत की विशेषतः हैदराबाद व कर्नाटक की गद्दी के उत्तराधिकार के विषय पर अंग्रेजों व फ्रांसीसियों के मध्य 3 कर्नाटक युद्ध लड़े गये।-

1- 1746-48 (सेन्ट टोमे का युद्ध) - यह मुख्यतः आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के विषय पर आरम्भ हुआ अर्थात भारत में अंग्रेजों व फ्रांसीसियों की लड़ाई यूरोपीय सबंधों से भी निर्धारित होती रही।

डुप्ले की सूझबूझ व कूटनीति से इस युद्ध में फ्रांसीसियों का पलड़ा भारी रहा और अन्ततः 1748 में एक्स-ला-शापेल की संधि द्वारा युद्ध विराम हुआ और मद्रास पुनः अंग्रेजों को सौंप दिया गया।

2- II कर्नाटक युद्ध (1749-54) - यह भारतीय परिस्थितियों के आधार पर लड़ा गया जब हैदराबाद व कर्नाटक में अंग्रेजों ने क्रमशः नासिरजंग व मोहम्मद अली का समर्थन किया तो दूसरी तरफ फ्रांसीसियों ने मुजफ्फरजंग व चंदा साहब का समर्थन किया और इसी युद्ध में रॉबर्ट क्लाइव की सूझबूझ सामने आयी जब उसने अर्काट की घेरेबंदी कर फ्रांसीसियों को भ्रमित कर दिया। अंततः 1754 में पांडिचेरी की संधि से युद्ध का अंत

KGS IAS

हुआ। किन्तु फ्रांसीसी प्रतिष्ठा में कमी आयी और डुप्ले को वापस बुला लिया गया। 1749 में आम्बेर के युद्ध में कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन को फ्रांसीसियों ने युद्ध में मार डाला।

3- III कर्नाटक युद्ध (1756-63) - ब्रिटेन और फ्रांस के मध्य सप्तवर्षीय युद्ध की छाया से भारत में तीसरा कर्नाटक युद्ध छिड़ गया और 1760 में वांडीवाश के युद्ध में आयरकूट के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने फ्रांसीसियों को निर्णायक शिकस्त दी। 1763 में पेरिस की संधि से युद्ध विराम हुआ और फ्रांसीसियों को चंद्रनगर व पांडिचेरी इस शर्त पर वापस किया गया कि अब वे केवल व्यापारिक गतिविधियों का संचालन करेंगे।

कहा जाता है कि इस युद्ध में केवल फ्रांसीसी कंपनी ही नहीं बल्कि पूरी फ्रांसीसी शक्ति ही हार गई।

KGS IAS